PAGE NO.:
DATE: / /

2) व्युत्पत्ति :

3) अभ्यास :
* अभ्यास कमजोर से उत्कृष्ट हो जाता है

* व्युत्पत्ति और अभ्यास प्रतिभा के एक पूरक सहायक है।

काव्य प्रयोजन
भरतमुनि :
दुःखार्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनां।
दुःखार्ता नाम श्रमार्ता नाम
विश्रान्ति जननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति ॥

धर्म्य यशस्यमायुष्यं हितं बुद्धिविवर्धनम्
लोकोपदेश जननं नाट्यमेतद् भविष्यति।

व्यक्ति दुःख मे रहता है साहित्य पढ़ने के बाद सुख मिलता है और श्रम के बाद विश्रान्ति देता है और शोक के बाद तपस्या के बाद नाटक विश्रान्ति देता है।

धर्म के लिए यश के लिए हित के लिए बुद्धि के लिए लोगो को उपदेश मिलता है यहि नाटक का साहित्य साहित्य मे मिलता है।

अर्थ - पेरा

PAGE NO.:
DATE: / /

भामह :

धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च
करोति कीर्तिं प्रीतिं साधुकाव्यनिबन्धनम्

धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष और कला मे निपुण -ता के लिए और किर्ति के लिए प्रेम के लिए काव्य लिखा जाता है काव्य प्रयोजन है।

* धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष अधिक लोगो को न माना है।
* वामन - काव्य प्रयोजन किर्ति के लिए और प्रीति के लिए

* दंडि - यश
* कुंतक - धर्म, अर्थ, काम मोक्ष, व्यवहार ज्ञान लोक उपदेश लोकोत्तर आनंद
* भोजराज - किर्ति और प्रीति

पहला नाटक - गोपालदास गिरिधर - नहुष
कामायनी - 15 सर्ग है

PAGE NO.:
DATE: / /

ग.मा.पि. मम्मट :

काव्यं यशसे अर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये

सद्यपरनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे

छः (6) काव्य प्रयोजन किये है।
सबको सुकृति इसपे होती है।

काव्य यश से अर्थ, व्यवहार ज्ञान, अमंगल निवारण के लिए तुरंत दूर करने के लिए जैसे पत्नी पति को मधुर-मधुर बातो से काम करवाती है जैसे काव्य उपदेश देता है समाज को

काव्य प्रयोजन
1 यश - (नाम कमाना)
2 अर्थ (पैसे के लिए)
3) अमंगल का नाश
4 शोक के नाश
5) व्यवहार ज्ञान
6) तुरंत दुःखो का नाश
उपदेश

पहला कहानी - इंदुमति - 1900
पहला उपन्यास - परिक्षा गुरु - 1882 - श्री निवास दास

PAGE NO.:
DATE: / /

मैथिलि शरण गुप्त :
केवल मनोरंजन नहीं कवि का कर्म होना चाहिए उसमे उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए

काव्य के प्रकार

दृश्य काव्य

श्रव्य काव्य

नाटक, एकांकी

गद्य

पद्य

चम्पू
गद्य और पद्य मे ली रहता है

उपन्यास, कहानी, निबन्ध
रेखा चित्र, जीवनी, आत्म
कथा, इत्यादि

प्रबन्ध
काव्य
मुक्तक
काव्य

प्रबन्ध काव्य

महाकाव्य

खण्ड काव्य

मुक्तक काव्य

गीत या
प्रगीत

कविता

PAGE NO.:
DATE:

महाकाव्य - रामचरितमानस , साकेत, कामायनी
रश्मिरथी ,

खण्ड काव्य :
महाकाव्य का एक टुकड़ा है।
मुख्य रूप से एक कथा और एक रस होता है।

मुक्तक काव्य :-
स्वतंत्र लिखा हो
एक पद्य से दूसरे पद्य से संबंध न हो
उदा :- सूरदास के पद , कबीर के पद, दोहे

गीत या प्रगीत ;
कुछ कविता गीयता का भाव, लय, और गा सकते है।
बंधन - उतार चढ़ाव होता है
उदा ; निराला कविता -
कविता :
तोड़ती पत्थर

चम्पू :
गद्य और पद्य मिश्रित रहते है।

PAGE NO.:

DATE: / /

काव्य लक्षण

संस्कृत के आचार्य द्वारा

1) भामह :

शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्

रचना - काव्यालंकार

भरत मुनि -

रचना - नाट्यशास्त्र

शब्द - और अर्थ एक साथ हो, उसे काव्य कहते है

सहितौ - सद्भाव, उपकार उसका सद्भाव ही

2) दण्डी :

शरीरंतावदिष्टार्थ व्यवच्छिन्ना पदावली

रचना - काव्यादर्श

इष्ट - सबसे अलग (ईश्वर देव)

जिसमें अर्थ इष्ट हो उसे काव्य कहते है।

3) वामन :

काव्य शोभाया: कर्तारो धर्मा गुणा:

रचना : काव्यालंकार सूत्रवृत्ति

काव्य वो है जिसकी शोभा गुणों से होता है

गुण ही काव्य का अलंकार है।

सौन्दर्यलंकार :

सौन्दर्य ही अलंकार है - अलंकार वाले सौन्दर्य को काव्य कहते है।

PAGE NO.:
DATE: / /

४) रुद्रट :

नन्‌ शब्दार्थौ काव्यम्

रचना : काव्यालंकार

ननु - निश्चय

निश्चय ही शब्द और अर्थ काव्य है।

5) कुन्तक :

सिद्धान्त - वक्रउक्ति

शब्दार्थौ सहितौ वक्रकविव्यापारशालिनी

बन्धे व्यवस्थितौ काव्यं तद्विदाह्लादकारिणी

जो वक्र मे लिखता होगा वैसे ही आह्लाद खुशी के साथ वक्रताव्यापार हो वैसे बन्धा व्यवस्थित से काव्य है।

रचना - वक्रोक्तिजीवितम्

6) मम्मट :

तद्दोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृति पुनः क्वापि

रचना - काव्यप्रकाश।

बिना दोष के शब्द अर्थ सद्गुण, अलंकार भी होनी चाहिए। कभी कभी अलंकार नहीं हो तो भी उसमे दोष नहीं होनी चाहिए गुण होना चाहिए उस

PAGE NO.:
DATE: / /

अलंकार कहते है।

7) विश्वनाथ :
वाक्यं रसात्मकं काव्यम्
रचना : साहित्य दर्पण

रस से भरा हुआ वाक्य ही काव्य है।
* रस को महत्त्व दिया।

8) पण्डित राज जगन्नाथ :
रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
रचना : रसगंगाधर

समय - 17वी शताब्दी

रमणीय अर्थ प्रतिपादक करनेवाले शब्द ही काव्य है।
सुंदर - अद्भुत सौंदर्य शब्द

स्मृति
मति
प्रज्ञा

PAGE NO.:
DATE: / /

जयशंकर प्रसाद

काव्य आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है
महसूस

काव्य हेतु - काव्य प्रेरणा
1) प्रतिभा
2) व्युत्पत्ति (शास्त्र, व्यवहार, बहुज्ञता ज्ञान)
3) अभ्यास

1) प्रतिभा
* जन्मजात होती है।
* सृजनात्मक होति है।
शक्त ही प्रतिभा है।

भट्टतौत :
प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता :
रचना : काव्य कौतुक
नव अन्वेषण

अभिनवगुप्त :
प्रतिभा अपूर्ववस्तुनिर्माणक्षमा प्रज्ञा
रचना : ध्वन्यालोक लोचन
नयेवस्तुओं का निर्माण

मम्मट :
शक्ति कवित्व - बीजरूप: संस्कार विशेष:
रचना : काव्यप्रकाश

शक्ति = प्रतिभा
जन्म से होता है और पारिवारिक होता है
प्रतिभा कवित्व में जन्मजात और पारिवारिक से होता है।

राजशेखर प्रतिभा के दो भागों मे बाँटा है।
रचना - काव्यमीमांसा
प्रतिभा :- कारयित्री (कवि की प्रतिभा)
भावयित्री (पाठक की प्रतिभा)

प्रतिभा के तीन रूप
1) स्मृति - भूतकाल
2) मति - वर्तमान
3) प्रज्ञा - भविष्य
} त्रिकाल दर्शी मे विचरण करने वाला

सबसे अधिक महत्व प्रज्ञा को दिया गया है क्योंकि भविष्य मे दूरदर्शी तक सोचता रहता है।

कवियो के प्रतिभा के तीन रूप
1) सजा - जन्मजात सहज रूप
2) अहार - उत्पाद्य - मार्गदर्शन, पढ़ने से धीरे-धीरे प्रतिभा उत्पादन होता है।
3)

PAGE NO.:

DATE: / /

2) व्युत्पत्ति :

3) अभ्यास :

* अभ्यास कमजोर से उत्कृष्ट हो जाता है

* व्युत्पत्ति और अभ्यास प्रतिभा के नाक पूरक सहायक है।

PAGE NO.:
DATE: / /

भारतीय काव्यशास्त्र

काव्य हेतु

'हेतु' का शाब्दिक अर्थ है कारण, अत: काव्य हेतु का अर्थ हुआ काव्य की उत्पत्ति का कारण। किसी व्यक्ति मे काव्य रचना की सामर्थ्य उत्पन्न कर देने वाले कर देने कारण काव्य हेतु कहलाते है। दूसरे शब्दों मे यह कहा जा सकता है कि काव्य 'कार्य' है और 'हेतु' कारण है। बाबू गुलाबराय ने काव्य हेतु पर विचार करते हुए लिखा है - "हेतु का अभिप्राय उन साधनो से है, जो कवि की काव्य रचना मे सहायक होते है।"

काव्य के निमित्त कारण को काव्य हेतु कहा जाता है। काव्य रचना कर सकने की सामर्थ्य हर व्यक्ति मे नहीं होती। जो व्यक्ति अपनी अनुभूतियो को सुँन्दर, विलक्षण, व्यँजनात्मक रूप मे अभिव्यक्त कर लेते है वे ही कवि है, क्योकि उनकी अभिव्यक्ति साधारणजन से भिन्न होती है।

भारतीय काव्यशास्त्र मे काव्य हेतुओ पर पर्याप्त विचार किया गया है और तीन काव्य हेतु माने गए है - 1) प्रतिभा, 2) व्युत्पत्ति, 3) अभ्यास। इनमे से प्रतिभा सर्वप्रमुख काव्य हेतु है जिसे काव्य त्त्व का बीज माना गया है। 'प्रतिभा' के अभाव

मे कोई व्यक्ति काव्य रचना नही कर सकता।

काव्य हेतुओ पर सर्वप्रथम 'अग्निपुराण' मे विचार किया गया और प्रतिभा, वेदज्ञान तथा लोकव्यवहार को काव्य हेतु के रूप मे स्वीकार किया गया :

1) आचार्य भामह का मत :

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा।
कवित्वं दुर्लभं तत्र, शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा।

— अग्निपुराण

अर्थात् "लोक मे नरत्व दुर्लभ है और उसमे विद्यावान नर होना दुर्लभ है। कवित्व परम दुर्लभ है और कविता करने की शक्ति (प्रतिभा) तो और भी दुर्लभ है।"

संस्कृत काव्यशास्त्र मे आचार्यो ने 'काव्य हेतु' पर पर्याप्त विचार - विमर्श किया है। यहाँ हम प्रमुख संस्कृत आचार्यो के 'काव्य हेतु' से सम्बन्धित मत कालक्रमानुसार प्रस्तुत कर रहे है।

1) आचार्य भामह का मत -

आचार्य भामह ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार' मे स्वीकार किया है कि गुरु के

उपदेश से जड़ बुद्धि भी शास्त्र अध्ययन करने मे समर्थ हो सकता है, किन्तु काव्य तो किसी 'प्रतिभा - शाली' द्वारा ही रचा जा सकता है।

गुरूपदेशादध्येतुं शास्त्रं जड़धियोऽप्यलम्।
काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावतः॥

निश्चय ही भामह 'प्रतिभा' को काव्य का प्रधान हेतु स्वीकार करते है, किन्तु एक अन्य श्लोक मे वे स्वीकार करते है कि "शब्दशास्त्र को जानने वालों की सेवा और उपासना करके, शब्द का तथा शब्दार्थ का ज्ञान करके तथा अन्य कवियो के कृतित्व का अध्य - यन करके ही काव्य रचना मे प्रवृत्त होना चाहिए।"

स्पष्ट है कि भामह 'प्रतिभा' के साथ - साथ 'व्युत्पत्ति' (शास्त्र ज्ञान) एवं 'अभ्यास' को भी काव्य हेतुओ मे स्थान देने के पक्षधर है।

2) आचार्य दण्डी का मत :-

आचार्य दण्डी ने अपने ग्रन्थ 'काव्य - दर्श' मे प्रतिभा, आनन्द अभियोग (अभ्यास) और लोकव्यवहार एवं शास्त्रज्ञान को काव्य हेतुओ के रूप मे मान्यता दी है। उनके अनुसार :

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहु निर्मलम्।
आनन्दाश्चयाभियोगो अस्याः कारणं काव्य सम्पदा॥

अर्थात् 'नैसर्गिक प्रतिभा, निर्मल शास्त्र ज्ञान और बड़ा-चढ़ा अभ्यास काव्य सम्पत्ति के कारण होते है।" नैसर्गिक प्रतिभा से उनका तात्पर्य जन्मजात प्रतिभा से है, जो ईश्वर प्रदत्त होती है। इस प्रतिभा को अर्जित नहीं किया जा सकता। प्रतिभा के अभाव मे निम्नकोटि की काव्य रचना निरन्तर अभ्यास एवं शास्त्र ज्ञान से हो सकती है।

3) आचार्य वामन का मत :

आचार्य वामन ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार सूत्रवृत्ति' मे प्रतिभा को जन्मजात गुण मानते हुए इसे प्रमुख काव्य हेतु स्वीकार किया है :

"कवित्व बीजं प्रतिभानं कवित्वस्य बीजम्"

वे लोक व्यवहार, शास्त्रज्ञान, शब्दकोश आदि की जानकारी को भी काव्य हेतुओं मे स्थान देते है। किन्तु अन्य स्थान पर वे काव्य हेतुओं मे प्रतिभा को कवित्व का बीज स्वीकार करते है जो जन्म-जन्मान्तर के संस्कार से शक्ति रूप मे कवि मे विद्यमान होती है। अभियोग, वृद्ध सेवा, अवेक्षण, अवधान आदि से ही उत्तम काव्य का निर्माण कर सकना सम्भव हो पाता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

4) आचार्य रुद्रट का मत :

आचार्य 'रुद्रट' ने अपने ग्रन्थ 'काव्यालंकार' मे प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य हेतु स्वीकार किया है। प्रतिभा के वे दो भेद मानते हैं - सहजा और उत्पाद्या। सहजा प्रतिभा कवि मे जन्मजात होती है और यही काव्य निर्माण का मूल हेतु है जबकि उत्पाद्या प्रतिभा लोकशास्त्र एवं अभ्यास से व्युत्पन्न होती है। यह सहजा प्रतिभा को संस्कारित एवं परिष्कृत करती है।

5) आचार्य मम्मट का मत :

आचार्य 'मम्मट' ने अपने ग्रंन्थ 'काव्यप्रकाश' मे काव्य हेतुओं पर विचार करते हुए लिखा है :

शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात् ।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ।।

अर्थात काव्य के तीन हेतु हैं - शक्ति (प्रतिभा), लोकशास्त्र का अवेक्षण तथा अभ्यास। वे एक अन्य स्थान पर यह भी कहते हैं - "शक्ति : कवित्व बीजरूप ;" अर्थात 'शक्ति' काव्य का बीज संस्कार है, जिसके अभाव मे काव्य रचना सम्भव ही नहीं है। जिसे अन्य आचार्य 'प्रतिभा' कहते है, उसी को मम्मट ने 'शक्ति' कहा है।

PAGE NO.:
DATE: / /

6) केशव मिश्र :-

"प्रतिभा कारणं तस्य व्युत्पत्ति विभूषणं"
अर्थात् "प्रतिभा काव्य का कारण है तथा व्युत्पत्ति उसे विभूषित करती है।"

7) हेमचन्द्र :-

इन्होंने अपने ग्रन्थ 'शब्दानुशासन' मे लिखा है - 'प्रतिभाऽस्य हेतु: प्रतिभा नवनवोन्मेष-शालिनी प्रज्ञा।' अर्थात् "प्रतिभा काव्य का हेतु है, तथा नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा को प्रतिभा कहते हैं।"

✓8) राजशेखर :-

"प्रतिभा व्युत्पत्ति मिश्र: समवेते श्रेयस्यौ इति" अर्थात् प्रतिभा और व्युत्पत्ति दोनो समवेत रूप मे काव्य के श्रेयस्कर हेतु हैं। वे प्रतिभा के दो भेद स्वीकारते हैं - i) कारयित्री, ii) भावयित्री। कारयित्री प्रतिभा जन्मजात होती है तथा इसका सम्बन्ध कवि से है। भावयित्री प्रतिभा का सम्बन्ध सहृदय पाठक या आलोचक से है।

9) पण्डितराज जगन्नाथ :

इन्होने अपने ग्रन्थ 'रस गंगाधर' मे 'प्रतिभा' के ही प्रमुख काव्य हेतु स्वीकार

DATE: / /

किया है;

"तस्य च कारणं कविगता केवलं प्रतिभा"

अत विवेचन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि काव्य के तीन प्रमुख हेतु है —
1) प्रतिभा 2) व्युत्पत्ति 3) अभ्यास

काव्य हेतुओं का स्वरूप
1) प्रतिभा —
प्रतिभा वह शक्ति है जो किसी व्यक्ति को काव्य रचना मे समर्थ बनाती हैं। राजशेखर ने प्रतिभा के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए कहा है — "सा शक्तिः केवलं काव्य हेतुः।"
आचार्य भट्टनीति के अनुसार प्रतिभा उस प्रज्ञा का नाम है जो नित नवीन रसानुकूल विचार उत्पन्न करती है।

✓ "प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता।"
आचार्य वामन का मत है कि प्रतिभा जन्म से प्राप्त संस्कार है जिसके बिना काव्य रचना सम्भव नहीं है।

✓ आचार्य अभिनवगुप्त ने प्रतिभा की परिभाषा करते हुए लिखा है — "प्रतिभा अपूर्व वस्तु निर्माण क्षमा प्रज्ञा"

अर्थात् प्रतिभा प्रज्ञा का वह रूप है जिसमें अपूर्व की सृष्टि करने की क्षमता होती है। कवि इसी के बल पर काव्य - सर्जना में समर्थ होता है।

वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक ने प्रतिभा उस शक्ति को माना है जो शब्द और अर्थ में अपूर्व सौन्दर्य की सृष्टि करती है, नाना प्रकार के अलंकारों, उक्ति वैचित्र्य आदि का विधान करती है।

प्रतिभा प्रथमोद्भेद समये यत्र वक्रता।
शब्दाभिधेय योरन्तः स्फुरतीव विभाव्यते।।

महिम भट्ट :
'प्रतिभा' को कवि का तृतीय नेत्र मानते हैं जिससे समस्त भावों का साक्षात्कार होता है। प्रतिभा नवीन सृजन में सहायक होनेवाली शक्ति है। प्रतिभा के अभाव में काव्य सृजन करने वाला कवि उपहास का पात्र बनता है।

आचार्य मम्मट :
ने प्रतिभा को एक नया नाम दिया। वे इसे 'शक्ति' कहते हैं और काव्य का बीज स्वीकार करते हैं जिसके बिना काव्य की रचना

DATE: / /

असम्भव है

शक्ति: कवित्व बीज रूप: संस्कार विशेष:

अर्थात शक्ति (प्रतिभा) कवित्व का बीजरूप संस्कार विशेष है। जिसके बिना काव्य सृजन नहीं हो सकता।

आचार्यों ने प्रतिभा का जो स्वरूप यहाँ स्पष्ट किया है उससे हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते हैं:

1) प्रतिभा काव्य का मूल हेतु है।

2) यह ईश्वर प्रदत्त शक्ति है।

3) प्रतिभा नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा है।

4) प्रतिभा के बल पर ही कवि अपूर्व शब्दों अपूर्व भावों अलंकारों, उक्ति वैचित्र्य आदि का विधान करता है।

5) प्रतिभा दो प्रकार की होती है कारयित्री प्रतिभा और भावयित्री प्रतिभा।

कारयित्री प्रतिभा वह होती है जिसके बल पर कवि कविता लिखता है और भावयित्री प्रतिभा वह होती है जिसके बल पर कोई पाठक कविता को समझता है।

सभी आचार्यों ने प्रतिभा के महत्त्व को स्वीकार किया है और इसे काव्य का मूल हेतु माना है।

डॉ. नगेन्द्र ने प्रतिभा को असाधारण कोटि की

PAGE NO.:
DATE: / /

मेधा मानते हुए कहा है कि प्रतिभा को नीरस और साधारण वातावरण अच्छे नहीं लगते वह असाधारणता में खुलकर खेलती है।

(2) व्युत्पत्ति :
व्युत्पत्ति का शाब्दिक अर्थ है निपुणता, पाँडित्य या विद्वता। ज्ञान की उपलब्धि को भी व्युत्पत्ति को भी कहा गया है। यह ज्ञानोपलब्धि शास्त्रों के अध्ययन और लोक व्यवहार के अवेक्षण से होती है। विद्वानों का मत है कि साहित्य के गहन चिन्तन-मनन से कवि की उक्ति में सौन्दर्य का समावेश हो जाता है और उसकी रचना सुव्यवस्थित हो जाती है।

रुद्रट ने यह बताया है कि छन्द, व्याकरण, कला, पद, और पदार्थ के उचित-अनुचित का सम्यक् ज्ञान ही व्युत्पत्ति कहा जाता है।

आचार्य मम्मट ने व्युत्पत्ति को एक नया नाम दिया है — निपुणता। यह निपुणता चराचर जगत के निरीक्षण और काव्य आदि के अध्ययन से प्राप्त होती है। राजशेखर के अनुसार — उचितानुचित विवेको व्युत्पत्तिः। अर्थात् उचित-अनुचित का विवेक ही व्युत्पत्ति है।

संस्कृत आचार्यों ने व्युत्पत्ति को काव्य हेतुओं मे दूसरा स्थान दिया है। व्युत्पत्ति के बल पर ही कोई व्यक्ति यह निर्णय कर पाता है कि किस स्थान पर किस शब्द का प्रयोग उचित होगा। सच तो यह है कि प्रतिभा और व्युत्पत्ति समवेत रूप में ही काव्य रचना के हेतु है। जैसे लावण्य के बिना रूप फीका लगता है वैसे ही रूप के बिना लावण्य भी आकर्षक नहीं लगता।

व्युत्पत्ति दो प्रकार की होती है; 1) शास्त्रीय, 2) लौकिक। शास्त्रीय व्युत्पत्ति शास्त्रों के अध्ययन से तथा लौकिक व्युत्पत्ति लोक के निरीक्षण से उत्पन्न होती है। प्रथम प्रकार की व्युत्पत्ति से जहां काव्य मे सौन्दर्य एवं व्यवस्था का समावेश होता है वहीं लौकिक व्युत्पत्ति से विषय की सम्यक् प्रस्तुति सम्भव होती है। कवि की अभिव्यक्ति दोषरहित, मार्मिक एवं प्रभावकारी तभी होती है जब वह लोक एवं शास्त्र की व्युत्पत्ति से युक्त हो।

लोक और शास्त्र का अध्ययन कवि को त्रुटियों से बचाता है। वर्ण्य विषय का ज्ञान, ऋतु ज्ञान, देश ज्ञान, भौगोलिक जानकारी आदि से कविता में त्रुटि आने की सम्भावना नहीं रहती अन्यथा मूर्ख कवि रेगिस्थान मे धान की खेती का वर्णन कर सकता है। शब्द शिल्प और भाषा पर अधिकार बहुज्ञता से ही होती है अतः कवि को निरन्तर सजग रहने की आवश्यकता होती है तभी वह उत्तम काव्य की

रचना करने मे समर्थ हो पाता है।

(3) अभ्यास :

काव्य निर्माण का तीसरा हेतु अभ्यास है। भामह ने लिखा है कि शब्दार्थ के स्वरूप का ज्ञान करके सतत अभ्यास द्वारा उसकी उपासना करनी चाहिए, साथ ही अन्य कवियो के कृतित्व का अध्ययन भी करना चाहिए। जिससे अभ्यास नित्य-प्रति दृढ़ होता जाए। आचार्य वामन ने भी अभ्यास को महत्व देते हुए लिखा है – 'अभ्यासो हि कर्मसु कौशलं भावहति।'

अर्थात् अभ्यास के द्वारा ही कवि कर्म मे कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

आचार्य दण्डी ने तो अभ्यास को ही काव्य का प्रमुख हेतु माना है। वे तो यहां तक कहते है कि प्रतिभा और व्युत्पत्ति के अभाव मे केवल अभ्यास से ही काव्य रचना मे कोई कुशल हो सकता है। सरस्वती की साधना से और शास्त्रो के श्रवण से कोई भी व्यक्ति सफल कवि बन सकता है। दण्डी की यह धारणा अन्य आचार्यो ने स्वीकार नही की। प्रतिभा के अभाव मे काव्य रचना सम्भव ही नही है। फिर कोरा अभ्यास व्यक्ति को कैसे कवि बना सकता है, किन्तु अभ्यास के

PAGE NO.:
DATE: / /

महत्व को नकारा नहीं जा सकता । प्रारम्भ मे प्रतिभा सम्पन्न कवि भी अच्छी कविता नहीं लिख पाते । निरन्तर अभ्यास से ही उनकी कविता निखरती है । जो कवि कीर्ति चाहते हैं उन्हें आलस्य को त्यागकर सरस्वती की उपासना करनी चाहिए और निरन्तर काव्य कर्म का अभ्यास करते रहना चाहिए । अभ्यास के महत्व को निम्न शब्दो मे स्वीकार किया गया है

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान ।
रसरी आवत जात ते सिल पर परत निसान ।

हिन्दी के रीतिकालीन आचार्यो ने काव्य हेतुओं पर विचार तो किया है पर वे कोई नवीन उद्भावना नहीं कर सके । भिखारीदास 'कविता' करने की 'शक्ति' जन्मजात मानते है :

सक्ति कवित बनाइवे की जिन जन्म नछत्र मे दीनी विधाता ।

आचार्य श्रीपति ने अपने ग्रन्थ 'काव्यसरोज' मे काव्य हेतुओं का उल्लेख इस प्रकार किया है :

शक्ति, निपुणता; लोकमत बित्पति अरु अभ्यास ।
अरु प्रतिभा ते होत है ताको ललित प्रकास ॥

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी के अनुसार

"कवि के लिए जिस बात की सबसे अधिक जरूरत होती है, वह प्रतिभा है।"

डॉ. नगेन्द्र
'प्रतिभा' को चेतना मानते हैं जो अनुभूति, चिन्तन, विचार, संकल्प तथा कल्पना, आदि क्रियाओं सम्पादित करती है।

पाश्चात्य विचारकों ने भी अपने ढंग से काव्य हेतुओं पर विचार किया है। यहाँ कुछ प्रमुख मत प्रस्तुत हैं:

1) अरस्तू :-
अरस्तू के अनुसार कवि की प्रतिभा जन्म-जात होती है। कवि को वे "A man of born talent" मानते हैं।

2) होरेस :-
इन्होंने प्रतिभा और अभ्यास को काव्य हेतु माना है - "For my part I fail to see the use of study without wit or of wit without training".

3) क्रोचे -
क्रोचे (Croce) ने स्वयं प्रकाश ज्ञान (Intution) और अभिव्यंजना (Expression)

की महत्ता स्वीकारते हुए काव्य हेतुओं मे वस्तुतः 'प्रति-भा' और 'अभ्यास' को ही महत्त्व दिया है।

4) टी. एस. ईलियट :-

महान रचना तभी जन्म लेती जब प्रौढ़ सभ्यता, प्रौढ़ भाषा और प्रौढ़ कलाकार एक साथ जुड़े हो। प्रौढ़ता से उनका तात्पर्य 'अभ्यास' से है 'प्रतिभा' की महत्ता भी उन्होंने स्वीकार की है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते है कि प्रतिभा व्युत्पत्ति और अभ्यास ही प्रमुख काव्य हेतु है किन्तु प्रतिभा सर्वप्रमुख है जिसे व्युत्पत्ति और अभ्यास से निरन्तर निखारा जा सकता है। वस्तुतः ये तीनों समन्वित रूप मे ही काव्य के हेतु हैं जिन्हें अलग - अलग नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार पानी को बार-बार छानने से वह निर्दोष हो जाता है और बर्तन को बार-बार मांजने से वह चमक उठता है उसी प्रकार व्युत्पत्ति और अभ्यास से प्रतिभा को निर्दोष और आकर्षक बनाया जा सकता है।

PAGE NO.:
DATE: / /

काव्य प्रयोजन

काव्य प्रयोजन का तात्पर्य है- 'काव्य रचना का उद्देश'"। काव्य किस उद्देश्य से लिखा जाता है और किस उद्देश्य से पढ़ा जाता है इसे दृष्टिमान रखकर काव्य प्रयोजनो पर कवि और पाठक की दृष्टि से विस्तृत विचार-विमर्श काव्यशास्त्र मे किया गया है। काव्य प्रयोजन काव्य प्रेरणा से अलग है, क्योंकि काव्य प्रेरणा का अभिप्राय है काव्य की रचना के लिए प्रेरित करने वाले तत्व जबकि काव्य प्रयोजन अभिप्राय है काव्य रचना के अनन्तर (बाद में) प्राप्त होने वाले लाभ। यहाँ हम काल-क्रमानुसार विभिन्न आचार्यो द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजनों की समीक्षा करेंगे।

1) भरतमुनि

'नाट्य शास्त्र' के रचयिता भरत मुनि ने नाटक के प्रयोजनो पर विचार करते हुए लिखा है:

धर्म यशस्यम् आयुष्यं हित बुद्धि विवर्धनम्।
लोकोपदेश जननं नाट्यमेतद् भविष्यति॥

भरत मुनि द्वारा निर्दिष्ट इन प्रयोजनो मे भौतिक प्रयोजनो का व्यापक उल्लेख है, किन्तु

काव्य का प्रधान उद्देश्य आनन्द : प्राप्ति है जिसका उल्ले-ख यहाँ नहीं किया गया है। एक अन्य स्थान पर उन्होंने नाटक का उद्देश्य दुःखार्त व्यक्ति को सुख और शान्ति की प्राप्ति करना बताया है —

दुःखार्त्तानां श्रमार्तानां शोकार्तानां तपस्विनाम्।
विश्रान्तिजननं काले नाट्यमेतद् भविष्यति॥

नाटक काव्य का ही एक रूप है अतः भरतमु-नि द्वारा निर्दिष्ट इन प्रयोजनों को 'काव्य प्रयोजन' स्वीकार किया जा सकता है।

2) भामह :

आचार्य भामह ने अपने ग्रंथ काव्यालंकार मे काव्य प्रयोजनो की चर्चा करते हुए लिखा है:

धर्मार्थ काम मोक्षेषु वैचक्षण्यं कलासु च।
करोति कीर्ति प्रीतिञ्च साधुकाव्य निबन्धनम्॥

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति कलाओं मे निपुणता के साथ-साथ उत्तम काव्य से कीर्ति और प्रीति (आनन्द) की भी प्राप्ति होती है। भामह के प्रयोजन व्यापक है तथा इनमे कवि और पाठक दोनो के काव्य प्रयोजनो की चर्चा है।

DATE: / /

3) आचार्य वामन :

"काव्यं सद्दृष्टा दृष्टार्थ प्रीति-कीर्ति-हेतुत्वात्"

अर्थात काव्य मे दो प्रमुख प्रयोजन है :
1) प्रीति अथवा आनन्द साधना, जो काव्य का दृष्ट प्रयोजन है।
2) कीर्ति अथवा यश प्राप्ति, जो काव्य का अदृष्ट प्रयोजन है।

4) आचार्य कुन्तक :
वक्रोक्ति सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य कुन्तक ने अपने ग्रन्थ 'वक्रोक्ति जीवितम्' मे काव्य प्रयोजनों का उल्लेख करते हुआ कहा है :

धर्मादि साधनोपाय : सुकुमारक्रमोदित : ।
काव्यबन्धोऽभिजातानां हृदयाह्लादकारक : ॥

अर्थात् काव्य धर्मादि सिद्धि का साधन होने के साथ-साथ आह्लाद उत्पन्न करने वाला होता है। इसी बात क्रम को आगे बढ़ाते हुआ वे यह भी कहते है :

चतुर्वर्गफलास्वादमप्यतिक्रम्य तद्विदाम् ।
काव्यामृतरसेनान्तश्चमत्कारो वितन्यते ॥

काव्य रूपी अमृत सहृदयों के अन्त:करण में चतुर्वर्ग फलस्वाद से भी बढ़कर आनन्द उत्पन्न करने वाला होता है। वे व्यवहार ज्ञान, आनन्दोपलब्धि एवं पुरुषार्थ चतुष्टय की सिद्धि को काव्य प्रयोजन मानते है।

5) आचार्य मम्मट :

आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ 'काव्य - प्रकाश' में काव्य प्रयोजनो पर विस्तृत चर्चा की है। उनके अनुसार।

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परिनिर्वृतये कान्तासम्मित तयोपदेशयुजे ॥

अर्थात काव्य यश के लिए प्राप्ति के लिए, व्यवहार ज्ञान के लिए, अमंगल शान्ति के लिए, अलौकिक आनन्द की प्राप्ति के लिए और कान्ता के समान मधुर उपदेश प्राप्ति के लिए प्रयोजनीय होते है।

मम्मट ने मूलत: छः काव्य प्रयोजन बताए है जो निम्नवत है :

1) यश प्राप्ति
2) अर्थ प्राप्ति
3) लोक व्यवहार ज्ञान
4) अनिष्ट का निवारण या लोकमंगल

5) आत्मशान्ति या आनन्दोपलब्धि, तथा
6) कान्तासम्मित उपदेश ।

इनमें से काव्य की रचना करने वाले कवि के प्रयोजन है — यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, आत्म शान्ति तथा काव्य का आस्वादन करनेवाले पाठक के काव्य प्रयोजन है — लोक व्यवहार ज्ञान, अमंगल की शान्ति, आनन्दोपलब्धि और कान्ता सम्मित उपदेश। मम्मट के ये काव्य प्रयोजन अत्यन्त व्यापक हैं। अब हम इनमें से प्रत्येक पर अलग - अलग विचार करेंगे।

1) यश प्राप्ति :

यश प्राप्ति की इच्छा से कविगण काव्य रचना मे प्रवृत्त होते रहे हैं। अतः यश प्राप्ति को मम्मट ने काव्य का प्रमुख प्रयोजन माना है। काव्य रचना करके अनेक महाकवियों ने अक्षय यश प्राप्त किया है। कालिदास, सूरदास, तुलसी, बिहारी, प्रसाद जैसे अनेक कवि आज भी अमर हैं। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस मे लिखा है :

" निज कवित केहि लाग न नीका ।
सरस होइ अथवा अति फीका ।
जो प्रबन्ध बुध नहिं आदरहीं ।
सो श्रम बादि बाल कबि करहीं ।। "

अर्थात् अपनी कविता किसे अच्छी नहीं लगती चाहे सरस हो या फीकी, किन्तु जिस रचना को विद्वानों का आदर प्राप्त नहीं होता उस रचनाकार का श्रम व्यर्थ ही है।

इससे यह ध्वनित होता है कि कवि की आकांक्षा होती है कि उसकी रचना विद्वानों के द्वारा सराही जाए अर्थात यश प्राप्ति की कामना सभी कवियों में होती है।

जायसी ने भी पद्मावत में यह स्वीकार किया है कि मैं चाहता हूँ कि अपनी कविता के द्वारा संसार में जाना जाऊँ।

"औ मैं जान कवित अस कीन्हा।
मकु यह रहै जगत मँह चीन्हा।।"

रीतिकालीन कवि आचार्य कुलपति, देव और भिखारीदास ने भी अपने काव्य प्रयोजनों में यश प्राप्ति को विशेष स्थान दिया है।

यह भी उल्लेखनीय है कि कवियों ने जिन राजाओं को अपनी कविता का विषय बनाया वे भी अमर हो गए। निष्कर्ष यह है कि यश प्राप्ति काव्य का प्रमुख प्रयोजन है। अंग्रेजी की यह कहावत कवियों

DATE: / /

पर भी लागू होती है।

"Fame is the last infirmity of noble minds." अर्थात् यश कामना महान व्यक्तियों की अन्तिम कमजोरी होती है।

2. अर्थ प्राप्ति :

काव्य रचना का एक प्रयोजन धन प्राप्ति भी रहा है। धनोपार्जन की इच्छा से रीतिकालीन कवियों ने राजदरबारों मे आश्रय ग्रहण किया। कहते हैं कि बिहारी को प्रत्येक दोहे की रचना के लिए एक अशर्फी प्राप्त होती थी। आधुनिक युग में कवि सम्मेलनों मे अनेक कवि अपनी कविताओं को गाकर, सुनाकर अच्छा-खासा धन पैदा कर रहे है। इस प्रकार कविता धनोपार्जन का माध्यम बन गई है। इसीलिए सम्भवतः मम्मट ने अर्थ प्राप्ति को काव्य प्रयोजनों मे स्थान दिया है।

3) व्यवहार ज्ञान :

आचार्य मम्मट ने व्यवहार ज्ञान को भी काव्य का प्रयोजन माना है। रामायण आदि महाकाव्यों के अनुशीलन से पाठकों को उचित व्यवहार की शिक्षा प्राप्त होती है। संस्कृत मे बहुत-सा साहित्य इसी प्रयोजन

को ध्यान में रखकर लिखा गया था। पंचतन्त्र, हितोपदेश, नीतिशतक जैसे ग्रन्थ व्यवहार ज्ञान की शिक्षा देने के लिए लिखे गए। काव्य के अनुशीलन से यह ज्ञात होता है कि हम कैसा व्यवहार करें। रामचरितमानस व्यवहार का दर्पण है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने चिन्तामणि में यह स्वीकार किया है कि काव्य से व्यवहार ज्ञान होता है

"यह धारणा कि काव्य व्यवहार का बाधक है, उसके अनुशीलन से अकर्मण्यता आती है, ठीक नहीं। कविता तो भाव प्रसार द्वारा कर्मण्य के लिए कर्मक्षेत्र का और विस्तार कर देती है।"

4) शिवेतरक्षतये :

'शिवेतर' का अर्थ है - अमंगल और 'क्षतये' का अर्थ है - विनाश। इसका तात्पर्य है कि काव्य अमंगल का विनाश करता है और कल्याण का विधान करता है। अपने युग और समाज को अनिष्ट से बचाने के लिए अनेक कवियों ने काव्य रचनाएँ लिखी है। कहा जाता है कि दिनकर जी ने युद्ध और सम्पूर्ण संसार को शान्ति का सन्देश देते हुए युद्ध के अमंगल से बचाया है।

धर्मवीर भारती का गीति नाट्य 'अन्धायुग' परमाणु अस्त्रों में निहित विनाश की विभीषिका से

विश्व को बचाने का प्रयास माना जाता है।

कभी - कभी कवि व्यक्तिगत अमंगल को दूर करने के लिए भी काव्य रचना करता है कहते हैं कि संस्कृत के मयूर कवि ने कुष्ठ रोग से मुक्ति पाने के लिए 'मयूर शतक' लिखा था, इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास ने 'हनुमान बाहुक' की रचना बाहु रोग से मुक्ति पाने के लिए की थी।

काव्य के पठन - पाठन से भी 'अमंगल' का विनाश होता है। अनेक लोग रामचरितमानस दुर्गा सप्तशती और गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ अमंगल के विनाश के लिए करवाते हैं।

5) आत्मशान्ति:

काव्य पढ़ने के साथ ही तुरन्त आनन्द का अनुभव होता है और परम शान्ति की प्राप्ति होती है। काव्य का रसास्वादन करने से अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। वस्तुतः आनन्दोपलब्धि ही काव्य का प्रमुख प्रयोजन है। काव्य का रसास्वादन करते समय पाठक को समाधिस्थ योगी के समान का अलौकिक आनन्द प्राप्त होता है। कुछ समय के लिए वह अपनी सत्ता को भूलकर काव्य के आनन्द मे लीन हो जाता है। इसीलिए काव्यानन्द को 'ब्रह्मानन्द सहोदर' कहा गया है। काव्य की रचना करके कवि को भी यही

आनन्द मिलता है और काव्य का रसास्वादन करके पाठक को भी वैसे ही आनन्द की अनुभूति होती है। इस प्रकार काव्य का प्रयोजन कवि और पाठक दोनों से सम्बन्धित है। काव्य में डूबा हुआ मन साधारणीकरण की स्थिति में पहुँचकर रसमग्न हो जाता है और यही रसमग्नता परमशान्ति अर्थात आनन्द प्रदान करती है। आचार्यों ने इसी कारण इस प्रयोजन को सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानते हुए 'सकलमौलिभूत' प्रयोजन कहा है।

6) कान्ता सम्मित उपदेश :

काव्य प्रियतमा के समान मधुर उपदेश देने वाला है। उपदेश तीन प्रकार के होते हैं:

1) प्रभु सम्मित उपदेश.
2) मित्र सम्मित उपदेश, तथा
3) कान्ता सम्मित उपदेश

वेदशास्त्रों का उपदेश प्रभु सम्मित (स्वामी के उपदेश जैसा) है। वह हितकर तो है पर रुचिकर नहीं। पुराणों और इतिहास आदि का उपदेश मित्रतुल्य उपदेश है, जिसकी अवहेलना भी की जा सकती है, किन्तु काव्य का उपदेश कान्ता सम्मित उपदेश है जो हितकर भी है, रुचिकर भी है और जिसकी अवहेलना भी नहीं की जा सकती।

जिस प्रकार कान्ता (प्रेयसी) मधुर हावभावों से पुरुष को मुग्ध करके उसे अपनी इच्छा-नुकूल नीति मार्ग पर ले जाती है उसी प्रकार काव्य भी मधुर कथा के द्वारा उच्च आदर्शों की शिक्षा देता है; उसी प्रकार रस के मधुर आस्वाद से मिश्रित शिक्षा काव्य द्वारा सरलता से कराई जा सकती है। इसीलिए कबीर, तुलसी, नानक, आदि अनेक कवियों ने अपने उपदेशों का प्रचार काव्य के माध्यम से किया है।

हिन्दी आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन:

हिन्दी आचार्यों ने काव्य प्रयोजन पर जो विचार व्यक्त किया है वे प्रायः संस्कृत आचार्यों जैसे है। यहाँ हम कुछ प्रमुख उद्धरण प्रस्तुत कर रहे है:

1) गोस्वामी तुलसीदास के काव्य प्रयोजन -

हिन्दी आचार्यों ने रामचरित मानस मे तुलसीदास ने दो स्थानों पर काव्य प्रयोजनों की चर्चा की है:

i) स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथ

ii) कीरति भनिति भूति भल सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥

वे काव्य के दो प्रयोजन मानते हैं ;
a) स्वान्तः सुख
b) लोक मंगल
वही कविता श्रेष्ठ होती है जो गंगा के समान सबका हित करने वाली हो।

2.) भिखारीदास द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन
एक लहैं, तप पुंजन के फल, ज्यों तुलसी अरु सूर गुसाईं।
एक लहैं बहु सम्पत्ति केशव, भूषण ज्यों बर बीर बड़ाई।
एकन्ह को जस-ही सों प्रयोजन, है रसखानि रहीम की नाईं।
दास कवितन्ह की चरचा बुद्धिवन्तन को सुख दै सब ठाईं॥

यहां यश प्राप्ति, धन प्राप्ति, आनन्द प्राप्ति आदि को काव्य प्रयोजन के रूप में स्वीकार किया गया है।

3) मैथिलीशरण गुप्त का मत :
गुप्तजी काव्य का प्रयोजन केवल मनोरंजन नहीं अपितु उपदेश स्वीकार करते हुए लिखते हैं ;

"केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।"

PAGE NO.:
DATE: / /

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का मत:
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने काव्य प्रयोजनों पर विस्तार से विचार किया है। वे काव्य का प्रमुख प्रयोजन रसानुभूति मानते है।

"कविता का अन्तिम लक्ष्य जगत में मार्मिक पक्षों का प्रत्यक्षीकरण करके उसके साथ मनुष्य हृदय का सामंजस्य स्थापन है।"

कविता से केवल मनोरंजन के उद्देश्य का विरोध करते हुए वे लिखते है:

"मन को अनुरंजित करना उसे सुख या आनन्द पहुँचना ही यदि कविता का अन्तिम लक्ष्य माना जाए तो कविता भी विलास की एक सामग्री हुई।...... काव्य का लक्ष्य है जगत और जीवन के मार्मिक पक्ष को गोचर रूप में लाकर सामने रखना।"

प्रसिद्ध विद्वान आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी साहित्य का लक्ष्य मानव हित एवं लोकमंगल मानते है। उनके अनुसार:

PAGE NO.:
DATE: / /

"मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ। जो वाग्जाल मनुष्य को दुर्गति, हीनता, परमुखापेक्षिता से न बचा सके, जो उसकी आत्मा को तेजोद्दीप्त न कर सके, जो उसे परदुःखकातर और संवेदनशील न बना सके, उसे साहित्य कहने में मुझे संकोच होता है।"

कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द भी काव्य या साहित्य का उद्देश्य मनोरंजन नहीं मानते। उनके अनुसार साहित्य का लक्ष्य मानव विवेक को जाग्रत करना है :

"साहित्य का उद्देश्य हमारा मनोरंजन करना नहीं है। यह काम तो भाटों, मदारियों, विदूषकों और मसखरों का है। साहित्यकार का पद इनसे बहुत ऊँचा है। वह हमारे विवेक को जाग्रत करता है, हमारी आत्मा को तेजोद्दीप्त बनाता है।"

पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र में काव्य प्रयोजन पर कला के सन्दर्भ में विचार किया गया है। इस सम्बन्ध में दो प्रमुख मत हैं। कलावादियों के अनुसार कला का एकमात्र प्रयोजन सौन्दर्य सृष्टि है और इसीलिए ये कला के लिए सिद्धान्त के समर्थक हैं, जबकि उपयोगितावादियों के अनुसार कला का उद्देश्य लोकहित का विधान करना है।

PAGE NO.:
DATE: / /

निष्कर्ष:
काव्य प्रयोजन के सम्बन्ध मे जो मत यहाँ व्यक्त किया गया है उनसे हम निम्न निष्कर्ष निकाल सकते है:

1) प्रत्येक व्यक्ति का काव्य का प्रयोजन एक सा नही होता।

2) आनन्द प्राप्ति काव्य का प्रमुख प्रयोजन है जिसे रसानुभूति से प्राप्त किया जाता है।

3) यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, व्यवहार ज्ञान, अमंगल का विनाश, लोकोपदेश भी काव्य प्रयोजन है।

4) काव्य प्रयोजन काव्य प्रेरणा से अलग है।

निष्कर्ष रूप मे आचार्य मम्मट द्वारा निर्दिष्ट काव्य प्रयोजन उचित, तर्कसंगत, व्यापक और व्यावहारिक है अतः हम उन्ही को वरीयता देते है। उदात्त काव्य का प्रमुख उद्देश्य लोकोत्तर आनन्द प्रदान करना, चेतना का परिष्कार करना और जीवन मूल्यों की स्थापना करना माना जा सकता है। रसानुभूति काव्य को ब्रह्मानंद सहोदर बनाती है अतः वही काव्य का सकल मौलिभूत प्रयोजन है।